



What is Arya Samaj?

Arya Samaj founded by Maharishi Dayanand Saraswati is an institution based on the teachings of Vedas for the welfare of universe. It propagates the universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

ARYAN VOICE

YEAR 38

5/2016-17

MONTHLY

May 2016

**Vedic Vivah Mela (Matrimonial get together)
Saturday 18th June 2016
Book your place NOW....!
(For more information see page 17&18)**

Dates for your diary

Annual General Meeting Sunday 31st July

**ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS
(Charity Registration No. 1156785)**

**188 INKERMAN STREET (OFF ERSKINE STREET), NECHELLS,
BIRMINGHAM, B7 4SA**

Tel: 0121 359 7727

E-mail– enquiries@arya-samaj.org

Website: www.arya-samaj.org

CONTENTS

10 Principles of Arya Samaj	3
पंचमहायज्ञ- वोध एवं विधि	आचार्य डॉ. उमेश यादव 4
Hall Hire Advert	11
Arya Samaj Foundation Day	12
Photo of Maharishi Dayanand Saraswati taken in Gurdaspur, Punjab on 18.08.1877	14
Dharma Artha Kama Moksha	15
Matrimonial Advert	16
Vedic Vivah Mela (Matrimonial Get Together 2016)	17
List of Festivals for year 2016	19
News (पारिवारिक समाचार)	20
Important	24

**For General and Matrimonial Enquiries
Please Ring
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)
Monday: - 1pm-5pm
Tuesday to Friday between: - 2.30pm to 6.30pm,
Wednesday: - 11.00am to 1.00pm.
Bank Holidays – Closed - Tel. 0121 359 7727
E-mail- enquiries@arya-samaj.org**

10 Principles of Arya Samaj

- 1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.(At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rigved, Yajurved, Samved and Atharva Ved contain all true knowledge,spiritual and scientific, known to the world.)**
- 2. God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**
- 3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**
- 4. All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**
- 5. All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**
- 6. The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**
- 7. All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**
- 8. We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**
- 9. One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**
- 10. In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights.**

पंचमहायज्ञ- वोध एवं विधि

पंचमहायज्ञ मनुष्य जीवन को श्रेष्ठ बनाने हेतु अत्यन्त सार्थक कर्म है । यह नित्य कर्म-विधि का हिस्सा है । इसमें पाँच प्रकार के दायित्व स्पष्ट किये गये हैं । १. ब्रह्म/परमात्मा का मंत्रात्मक चिन्तन व उसकी उपासना ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या) २. वातावरण की शुद्धि, शुद्ध विचारों के विकास, सुख-लाभ व जग-हित के लिये मंत्रोच्चारण के साथ परमात्मा से प्रार्थनापूर्वक यज्ञाग्नि में आहुतियाँ देना देव-यज्ञ (अग्निहोत्र/हवन) ३. पशु, पक्षी आदि अन्य प्राणियों की रक्षा करना, उन्हें आवश्यकतानुसार दाना-पानी देना व विना हिंसा किये मानवहित में उनका सदुपयोग लेना बलिवैश्वदेवयज्ञ कहलाता है । ४. माता-पिता का आदर, उनकी सेवा तथा उनका कहना मानना पितृ-यज्ञ और ५. विद्वान् आचार्यों, ऋषियों व गुरुओं का आदर करना व उनके निर्देशों का पालन करना, विना बताये भी ये घर पर पधारें तो भी इनका पूरा सत्कार करना व इनकी आज्ञाओं को मानना अतिथि-यज्ञ । ये पंच कर्म श्रेष्ठ हैं अतः ये नितान्त करणीय होने से महायज्ञ कहलाते हैं । जो श्रेष्ठतम कर्म हैं, वे ही यज्ञ माने जाते हैं । यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म अर्थात् श्रेष्ठतम कर्म ही यज्ञ होता है । जिस कर्म में स्वयं एवं जग का हित निहित है वही परोपकार, समर्पण, सेवा व पवित्रता से युक्त होकर श्रेष्ठ कर्म बन जाता है जो यज्ञ का द्योतक है । उपरोक्त पाँचों कर्म सचमुच जीवन के उच्चतम कर्म हैं जो एक मनुष्य को श्रेष्ठ बनाने में अत्यन्त सार्थक हैं । ऐसा करने वाला व्यक्ति ही स्वयं में श्रेष्ठ, श्रेष्ठ पथानुगामी, श्रेष्ठ पथ-नियामक तथा संसार के लोगों के लिये श्रेष्ठपथ पर चलने हेतु प्रेरणास्रोत होगा । अब हम एक-एक के वारे में थोड़ा वोधात्मक विचार करते हैं ।

3. बलिवैश्वदेवयज्ञ

यह एक पृथक् यज्ञ है जो सब पशु-पक्षी आदि प्राणियों की रक्षार्थ भावना करके सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर से प्रार्थना करके हुये ये आहुतियाँ हर परिवार में भोजन पकने के बाद गृहिणी द्वारा चुल्हे की अग्नि पर अर्पित करने का विधान है । मंत्रोच्चारणपूर्वक १० आहुतियाँ नमकीन भोजन को छोड़कर घृत से बना या शुद्ध भात से पाकशाला की अग्नि में डालें । अगर दैनिक यज्ञ घर में होता है तो ये १० आहुतियाँ दैनिक यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद हवन-कुण्ड में भी डालकर इस यज्ञ को पूरा किया जा सकता है । ये आहुतियाँ इस प्रकार हैं-

१. ओ३म् अग्नये स्वाहा २. ओ३म् सोमाय स्वाहा ३. ओ३म् अग्निषोमाभ्यां स्वाहा ४. ओ३म् विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ५. ओ३म् धन्वन्तरये स्वाहा ६. ओ३म् कुह्वै स्वाहा ७. ओ३म् अनुमत्यै स्वाहा ८. ओ३म् प्रजापतये स्वाहा । ९. ओ३म् सह द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा १०. ओ३म् स्विष्टकृते स्वाहा ॥

पशु, पक्षी, कृमि आदि प्राणियों के लिए दाना-पानी भोजन-भाग निकालना ही "बलि" भाग कहलाता है । इसके लिये महर्षि दयानन्द ने निम्न मंत्रों से भोजन-भाग रखने का निर्देश दिया है ।

१. ओं सानुगायेन्द्राय नमः -इससे पूर्व २. ओं सानुगाय यमाय नमः- इससे दक्षिण ३. ओं सानुगाय वरुणाय नमः-इससे पश्चिम ४. ओं सानुगाय सोमाय नमः-इससे उत्तर ५. ओं मरुद्भ्यो नमः-इससे द्वार ६. ओं अद्भ्यो नमः- इससे जल ७. ओं वनस्पतिभ्यो नमः-इससे मूसल और ऊखल ८. ओं श्रियै

नमः-इससे ईशान ९. ओं भद्रकाल्यै नमः-इससे नैर् ऋत्य १०. ओं
 ब्रह्मपत्ये/ब्रह्मणे नमः-मध्य ११. ओं वास्तुपतये नमः-इससे भी मध्य १२.
 ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः-से ऊपर १३. ओं दिवाचरेभ्यो भूतेभ्यो नमः-इससे
 ऊपर १४. नक्तंचारिभ्यो भूतेभ्यो नमः-इससे भी ऊपर १५. ओं सर्वात्मभूतये
 नमः-इससे पृष्ठ/पीछे १६. ओं पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः-इससे पुनः
 दक्षिण ।

इन मंत्रों से एक पतल वा थाली में यथोक्त दिशाओं में भाग रखने का
 विधान है । यदि भाग रखते हुये कोई अतिथि आ जाय तो उसी को दे देना
 अर्थात् उस अतिथि को पहले मानपूर्वक भोजन देना, नहीं तो अतिथि के
 नाम पर अग्नि में भाग रख देने का आदेश है । बाद में घृत सहित
 लवणान्न=नमकीन अन्न लेके छः भाग अलग निकालें और कुत्ता, पतित,
 चाण्डाल, पापरोगी, काक और कृमि इन छः के नामों से भाग पृथिवी पर
 रख फिर उसे जिस-जिस के नाम से भाग रखे गये हैं, उस-उस को वह
 भाग देने का विधान है । इसमें मनुस्मृति ३.९२ का यह प्रमाण द्रष्टव्य है-
 शुनां च पतितानां च श्वपचां पापरोगिणाम् । वायसानां कृमीणां च
 शनकैर्निर्वपेद् भुवि ॥

४. पितृ यज्ञ

यह एक कर्त्तव्य बोधक व्यावहारिक यज्ञ है । इसमें आहुति नहीं दी जाती
 पर जीवित माता-पिता आदि वजुर्गों का कहना मानना, उनकी सेवा करना,
 उनके ज्ञान व अनुभव से सीखना व उनके प्रति हरदम श्रद्धा भाव रख
 उनका आदर करना ही पितृयज्ञ है । श्रद्धा से की गयी सेवा ही श्राद्ध है और

इस से मातापिता आदि बड़ों को तृप्त रखना यानि उन्हें प्रसन्न रखना ही तर्पण है । पौराणिक मत में जो मरे लोगों के लिये गया आदि स्थानों पर जाकर जो श्राद्ध व तर्पण की बात लिखी है सो पूर्णतया अवैदिक है । इससे मरे लोगों को कोई तृप्ति नहीं होती उल्टा कार्यकर्त्ता अविद्यान्धकार का शिकार हो समय व धन बर्बाद करता है । मरने के बाद तो जीवात्मा शीघ्रातिशीघ्र अन्ये जीवन में चला जाता है या मोक्ष को प्राप्त कर लेता है । इसका विस्तृत ज्ञान अन्त्येष्टि-कर्म के प्रकरण में दिया गया है । अतः हमें सदैव जीवित लोगों की ही सेवा करनी चाहिये । माता-पिता वा आचार्य की सेवा करना सबका कर्त्तव्य है । यह एक ऋण समझा जाता है क्योंकि ये हमें जन्म देकर कष्टपूर्वक हमारा पालन-पोषण भी करते हैं । किसी ने ठीक लिखा है कि “जीवित पिता से दंग-दंगा और मरे पीछे पहुँचावे गंगा” । यह एक समाज पर करारा व्यंग है । कहने का अर्थ है कि जीवित माता-पिता का आदर व उनकी आज्ञा का पालन करना हमारा परम कर्त्तव्य है न कि मृत का ।

५. अतिथि यज्ञ

यह भी विना आहुतियों का कर्त्तव्य बोधक व्यावहारिक यज्ञ है । जैसे माता-पिता का ऋण होता है वैसे ही गुरु, आचार्य, ऋषि, महर्षि आदि पक्षपातरहित, सदाचारी, सत्यवादी धर्मात्मा विद्वानों का भी हमारे ऊपर ऋण है । ये भी अपने ज्ञान व अनुभव से हमें सीखाते, पढ़ाते व सँसार में जीने योग्य बनाते हैं । इनकी सेवा करना, आदर करना व आज्ञाओं का पालन करना हमारा धर्म है । ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी व सँन्यासी गृहस्थ के घर गाहे-व-गाहे विना तिथि निर्धारण किये भी आते हैं । तब भी हमें

उनका आदर-सत्कार में कोई कमी नहीं छोड़नी चाहिये; यही सच्चा अतिथि यज्ञ है । विनम्र भाव से “नमस्ते” शब्द बोलकर सबका आदर करना चाहिये ।

ये पंच महायज्ञ पूरे हुये ।

अब हम कुछ दिनचर्या परक व्यवहार की चर्चा करेंगे ।

पूर्णमासी की आहुतियाँ

१. ओ३म् अग्नये स्वाहा । २. ओ३म् अग्निषोमाभ्यां स्वाहा । ३. ओ३म् विष्णवे स्वाहा ।

अमावस्या की आहुतियाँ

१. ओ३म् अग्नये स्वाहा । २. ओ३म् इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा । ३. ओ३म् विष्णवे स्वाहा ।

भोजन प्रारम्भ करने का मंत्र

ओ३म् अन्नपतेऽअन्नस्य नो देहयनमीवस्य शुष्मिणः ।

प्र प्रदातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

अर्थ- हे अन्न के स्वामी परमात्मन् ! हमें रोगनाशक, पुष्टिवर्धक व शुद्ध अन्न दें । हे प्रभो ! आप अन्नदाता कृषक आदि का कल्याण करें । हम दो पाये मनुष्य और चौपाये पशु आदि प्राणियों में भी ऊर्ज शक्ति, तेज व पोषण भरे ।

भोजनोपरान्त मंत्र

ओ३म् मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः, सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य ।
अर्यमणं पुष्यति नो सखायं, केवलाघो भवति केवलादी ॥

अर्थ- मूढ अज्ञानि अन्न को व्यर्थ ही पाते हैं वा इसका सद् प्रयोग नहीं जानते । सत्य कहता हूँ (ईश्वरीय वाणी), वह उस अन्न का वध ही करता है । कारण कि उस अन्न से वह न तो प्रजा का, न ही वन्धुजन का पोषण करता है । ठीक ही कहा है कि अकेला खानेवाला केवल पापमय भोजन करता है अर्थात् प्राप्त भोजन को मिल बाँटकर खाना चाहिये ।

अभिवादन

सबको विनम्र भाव से एक-दूसरे का आदर, स्नेह, प्यार वा आशीष भेंट करते हुये “ नमस्ते ” शब्द बोलना चाहिये । ऐसा करने से चार गुणों का विकास होता है । नीतिकार चाणक्य का यह श्लोक इसकी पुष्टि करता है । देखें- अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोऽपि सेविनः । चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम् ॥ अभिवादन (सादर/सस्नेह व साशीष “नमस्ते ”-वादन) करने वाले और बड़ों का आदर करने वाले के आयु, विद्या, यश व बल ये चार चीजें स्वाभाविक ही बढ़ती हैं । नमस्ते कहकर अभिवादन करना वैदिक सिद्धान्त है ।

यज्ञोपवीत-धारण-मंत्र

ओ३म् यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुँच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥१॥

ओ३म् यज्ञोपवितमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनहयामि ॥

पा.गृ.२.२.१०-११

अर्थ- १. यह यज्ञोपवीत परम पवित्र, सब प्रजाओं के स्वामी परमेश्वर के प्रति समर्पण-भाव का सूत्र है । आयुवर्धक, ऋण-पूर्ति का प्रेरक, शुद्ध, बल व तेज का प्रोत्साहक है ।

२. हे यज्ञ-प्रेरक, तू यज्ञ का पवित्र सूत्र है । तुझे इसी पवित्र भाव से पहनता हूँ ।

नोट- इसमें तीन धागे होते हैं जो तीन ऋणों को हमें याद दिलाते हैं । १. ईश्वर जिसने हमारे लिये संसार बनाया । २. माता-पिता जिन्होंने हमें जन्म देकर हमारा पालन-पोषण किया और ३. गुरु/आचार्य जिन्होंने हमें ज्ञान देकर संसार में सुखपूर्वक जीने योग्य बनाया ।

शांति-पाठ

हर कार्यक्रम के अन्त में सर्वत्र सुख, कल्याण व शांति की पवित्र कामना के साथ निम्न मंत्र का उच्चारण करें ।

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः
शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ यजु.३६.१७

Arya Samaj (West Midlands) Hall Hire

Perfect venue for –

- **Engagements**
- **Religious Ceremonies**
- **Community events**
- **Family parties**
- **Meetings**

Venue information –

- **£300 for 6 hours (min.)**
 - **£50 Hourly**
- **Main Hall with Stage**
 - **Dining hall**
 - **Kitchen**
 - **Cleaning**
- **Small meeting room**
- **Vegetarian ONLY**
 - **NO Alcohol**
 - **Free parking**

**For more information call us on
0121 359 7727**

**Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm Bank Holidays – Closed**

ARYA SAMAJ FOUNDATION DAY

On Sunday, 10th April 2016, we celebrated Arya Samaj Foundation Day in our Bhavan.

Dr Narendra Kumar welcomed the guests. He spoke about history of Arya Samaj establishment.

Maharishi Dayanand Saraswati felt that while the world had progressed in material matters, those fundamental laws had been lost sight of on which the peace and prosperity of mankind was based. Some people in Bombay spoke to Swami ji and expressed their wish to establish a Arya Samaj in Bombay. At a meeting held on 7th April 1875 in Dr Manjk ji's garden near Prarthna Samaj Hall in Girgaum road Bombay at 5.30pm and presided over by Girdharilal Dayaldas Kothari and in presence of Maharishi Dayanand Saraswati Arya Samaj was established. Several members requested Swami Ji to be the President or leader of the Samaj but Swami ji declined to do so. Swami ji agreed to become an ordinary member of this Samaj. There were 100 members including Swami Ji of Arya Samaj Bombay on that day. Rajeshwari Pannachand Anandji Parekh framed rules and regulations of the Arya Samaj and Swami ji made necessary amendments in them. There were 28 rules of Arya Samaj.

Dr Kumar also mentioned that it was a well documented fact that Arya Samaj foundation day was Wednesday, 7th April 1875 and NOT 10th April 1875. So we should follow this in future.

At the request of local followers, on 24th June 1877 Swami Ji laid down the foundation Of Arya Samaj in Lahore while at the house of Dr Rahim Khan. Here Swami Ji wrote down the 10 principles of Arya Samaj.

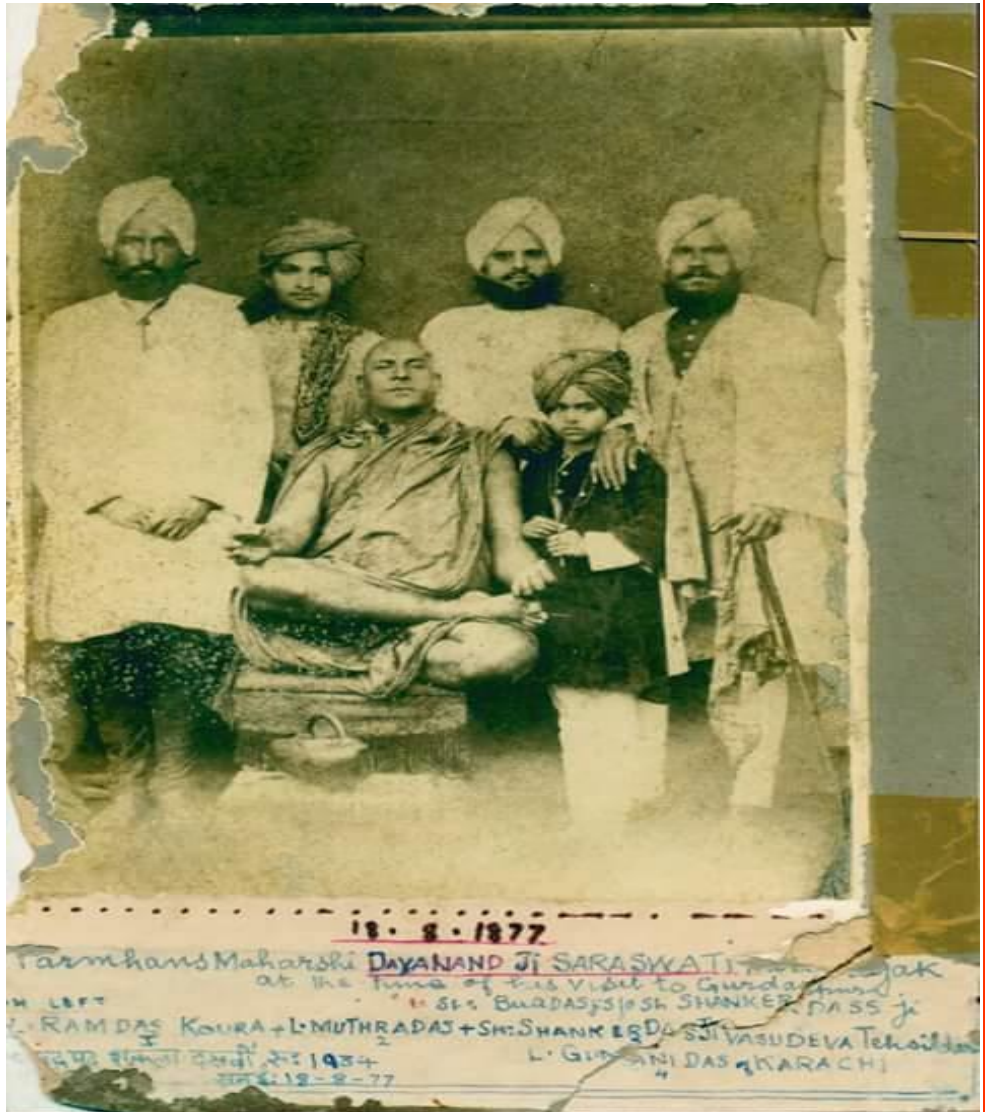
Now these 10 principles of Arya Samaj are the back bone of Arya Samaj movement. In our monthly bulletin “Aryan Voice “these 10 principles are published on page 3 of each bulletin.

Arya Samaj is **NOT** a religious sect as it does not believe in human representation of God in form of a prophet, mediator or saviour or Avtar (incarnation). Christianity, Islam and Buddhism are religious movements. Arya Samaj believes that every human being is directly connected with the Supreme being and worship of God means holding of direct spiritual communion with him.

Acharya Umesh ji spoke about the importance of Arya Samaj and the relevance of 10 principles of Arya Samaj in our day today life. He emphasised how important it was for us to speak the truth. Maharishi Dayanand was a staunch follower of truth in every aspect of his life i.e in his actions, writings, thinking, behaviour and speeches/sermons. He wrote famous book “Satyarth Prakash “to tell the world the true teachings of Vedas.

The function concluded by singing Arti and reciting Shanti Path.

Photo of Maharishi Dayanand Saraswati taken in Gurdaspur, Punjab on 18.08.1877



DHARMA ARTHA KAMA MOKSHA

Our existence on this earth should have a purpose. In order to live a fulfilling, happy and healthy life we should follow the teachings of Vedas. Towards the end of his masterpiece book “Satyarth Prakash” Maharishi Dayanand Saraswati wrote “A statement of My Beliefs”. Maharishi Dayanand Saraswati has written very clearly the true meanings of Dharma, Artha, Kama and Moksha. These are as following.

DHARMA- The practice of fair and impartial justice together with that of truthfulness in word, deed and thought and the like- in a word, that which is in conformity (agreement) with the will of God, as written in Vedas- even that I call Dharma. But the practice of that which is NOT free from partiality and injustice as well that of untruthfulness in word, deed and thought- in a word that which is opposed to the will of God, as embodied in Vedas, even that I call Adharma.

ARTHA- The righteously (morally right or justifiable) and honestly acquired wealth alone constitutes Artha while that which is acquired by foul means is called Anarth.

KAMA- The enjoyment of legitimate desires with the help of honestly acquired wealth constitutes Kama.

MOKSHA- The freedom of soul from pain and suffering of every description and subsequent career of freedom in the all pervading God and his immense creation for a fixed period of time and its resumption of earthly life after the expiration of that period constitutes Moksha (salvation).

The means of salvation are the worship of God, in other words, the practice of Yoga, the performance of righteous deeds, the acquisition of true knowledge by the practice of Brahmacharya, the society of wise and the learned (Satsang), love of true knowledge, purity of thought and life of activity and so on.

VEDIC VIVAH (MATRIMONIAL) SERVICE

The vedic vivah (matrimonial) service has been running for over 30 years at Arya Samaj (West Midland) with professional members from all over the UK.

Join today.....

Application form and information can be found on the website
www.arya-samaj.org

Or

Call us on

0121 359 7727

Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm
Bank Holidays - Closed

VEDIC VIVAH MELA (Matrimonial Get Together) **2015**

Date: Saturday 18th June 2016

Venue: Arya Samaj West Midlands, Erskine Street, Nechells,
Birmingham B7 4SA (Road Map available on our Website)
www.arya-samaj.org

Time: 11.30am – 5pm

Cost: £25.00 per applicant. **NO GUESTS**

Buffet: Vegetarian meal included with soft drinks (no alcohol will be allowed or served)

How will it work?

We will have registration, welcome drink, light snacks and mingling.

Speed dating - Members will meet each other for a period of 3 to 4 minutes, during which you will be able to chat and find out about each other. (If you like the person, make a note of their ref number on the packs given on the day and we will send you there information by email). When the time is up, a bell will sound; you will change partner and repeat the process.

Once the speed dating is over, late lunch will be served and everyone is free to mingle some more before the end of the event.

We will explain the above and other details of the event on the day.

What you need to do now?

This Get-together is strictly for Arya samaj west Midlands registered matrimonial service candidates only. So if you are not registered as yet and wish to benefit from this event where you can meet personally a number of prospective partners hurry up and join. Forms are available on our website www.arya-samaj.org. Or tel. 0121 359 7727

Please send your application forms well before the day of the event because it is first come first served basis. **(Form is enclosed). (Forms can also be found on the website or by calling the office).** For the smooth running of the event, all the information must be processed and the paper work completed for the participants on their arrival. Applications received after 5th June 2016, would not be entertained. But please do not wait till the last date. It might be too late.

Sorry at this event we are not allowing guest. If you bring someone with you on the day they will be refused entry.

Please send application forms and cheques made payable to 'Arya Samaj West Midlands. **(Applicants £25)** with a self addressed stamped envelope to Arya Samaj West Midlands, Erskine Street, Nechells, Birmingham B7 4SA .You will be sent confirmation by post and email. You will have to bring this with you on the day or no entry will be allowed. Regrettably no entry will be available on the day, so please register in advance.. **If you come on the day without an entry confirmation it would be a wasted journey.**

So what are you waiting for? Look no further and think no further! Send in your application forms and cheque today!

We look forward to welcoming you to the event where you have the prospect of meeting that special SOMEONE!!

List of Festivals for year 2016

Festival	Actual Date of Festival	Date for celebration in Arya Samaj
Republic Day of India	Tuesday 26th January	Sunday 31st January.
Rishi Bodh Utsav	Monday 7th March	Sunday 6th March
Holi	Thursday 24th March	Sunday 27th March.
Arya Samaj Foundation Day	Sunday 10th April	Sunday 10th April
Ram Navmi	Friday 15th April	Sunday 17th April.
Annual General Meeting	N/A	Sunday 31st July
Ved Katha (8 days)	N/A	From Thursday 18th August till Thursday 25th August
Raksha Bandhan	Thursday 18th August	Sunday 21st August
Independence Day of India	Monday 15th August	Sunday 21st August.
Shri Krishna Janmasthanmi	Thursday 25th August	Thursday 25th August
Special Satsang for University Students	N/A	Sunday 4th September
Gayatri Maha Yajna	N/A	Sunday 11th September
Dasahahara	Tuesday 11th October	Sunday 16th October
Diwali	Sunday 30th October	Saturday 29th October

News

Congratulations:

- Mr Andeep & Mrs Poonam Mangal for Grih-pravesh on 26th March 2016.
- Mr Rajvinder & Mrs Rubbi Chattha for Grih-pravesh on 3rd April 2016.
- Mr Jogender Paul & Mrs Rani Kashyap for havan on 3rd April 2016 for good health & prosperity.
- Mr Gurmeet and Mrs Deeksha Singla for Grih-pravesh on 8th April 2016.
- Mr Vikas & Mrs Isha Bali for Simantonnayan Sanskar on 9th April 2016.
- Mr Ramsarup Kohli for the havan on 10th April 2016 to celebrate 92nd birthday. Also congratulaions to their children and grandchildren.
- Mr Mahavir & Mrs Rajni Sharma for Saint-havan on 16th April 2016 before wedding ceremony of their son Rahul Sharma.

Many thanks and congratulations to all yajmans & food-sponsors on our Sunday Vedic Satsangs in Arya Samaj Bhavan.

- **Mr Rajesh Kumar & Mrs Parveen Kumar for havan on 20th March 2016 for happiness and prosperity in family.**
- **Mr Parveen Ghai, Mrs. Nimmi Ghai and whole of Family for havan on 27th March 2016 for blessing and Naming ceremony of their newly born grandson, who was named as Naitik, son of Mrs & Mr Atul Ghai.**
- **Mr Rajiv Datta, Mrs Deepika Datta and whole of the Family for havan on 17th April 2016 for blessing and Naming ceremony of their newly born grandson who was named Ajay William Datta; son of Mr. Lav & Mrs Steph William Datta.**

Donations to Arya Samaj West Midlands

- | | |
|--|-------------|
| • Mr. Rajesh Salota with Rishi-Langar | £150 |
| • Mr & Mrs Shailesh Joshi | £251 |
| • Mr. Atul Ghai with Rishi-Langar | £351 |
| • Dr. P.G. Ghai | £51 |
| • Mrs. Brij Bala Duggal | £20 |
| • Mr Rajiv Datta | £51 |

- Mrs. Vinay Sharma £11
- Mr. S.P. Datta £11

Donations to Arya Samaj West Midland through the Priest-Services.

- Mr. Andeep Mangal £51
- Mr. Rajvinder Chattha £51
- Mr. Jogender Pal Kashyap £101
- Mr. Gurmeet Singla £101
- Mr. Vikas Bali £51
- Mr. Ramsarup Kohli £51
- Mr. Mahavir Sharma £51+£11 = £62

Thank you for all your
Donations

**Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on
0121 359 7727
for more information on**

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**
- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**
- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**
- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**
- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 1st May & 5th June 2016**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org
Website: www.arya-samaj.org

IMPORTANT

Notices to Arya Samaj West Midlands Members

- **Reminder to our Life members from Dr. Narendra Kumar (Chairman). In July 2014 we requested our life members to donate £15 or £10 per year to help us with the cost of publishing, printing and posting our monthly bulletin "Aryan Voice". I am happy to say that vast majority of members have donated money to help us with this cost. It is a very polite request to our life member please continue with this donation. Those of you who have not donated any money till now please do so.**
- **Dear Ordinary members of ASWM. This is a polite request to pay your annual fee of £20 membership when you receive a reminder letter from Arya Samaj Office. This money helps us to send you Aryan Voice each month. The letter will come out to members on the month they joined. From January 2016 we will have to sadly cancel the membership of those who have not paid the fee.**
- **Dear members, we are updating our email database for the membership of Arya Samaj West Midlands. We do not have email addresses of a large number of our members. In this time and age it is important to have this information. So if you have an email address please inform our office by emailing your address to enquiries@arya-samaj.org. Your cooperation will be highly appreciated.**